०७.रघोत्तम गुरु राय रघुरामन प्रीय...

रघोत्तम गुरु राय रघुरामन प्रीय 'पल्लवि'

बगॆ बगॆयॆलि निम्म बागि बेडुवॆ मतिय
भाग्यव नित्तु पॊरॆयॊ रघुवर्य करजात
भावशुद्ध जनरिगॆ भाव बोधव रचिसि
भव दुःख बिडिसि भुवन पावन चरित-------१

वात आतप सहन अति तपोमय निम्म
स्तुतिसलापॆनॆ चॆन्न प्रीतिलि सलहॊ ऎन्न
जयपूर्ण बोधार्यर गुणकॆ नी रत्नाकर
विजय विठल हयग्रीव तोयज पाद भ्रमर-----२